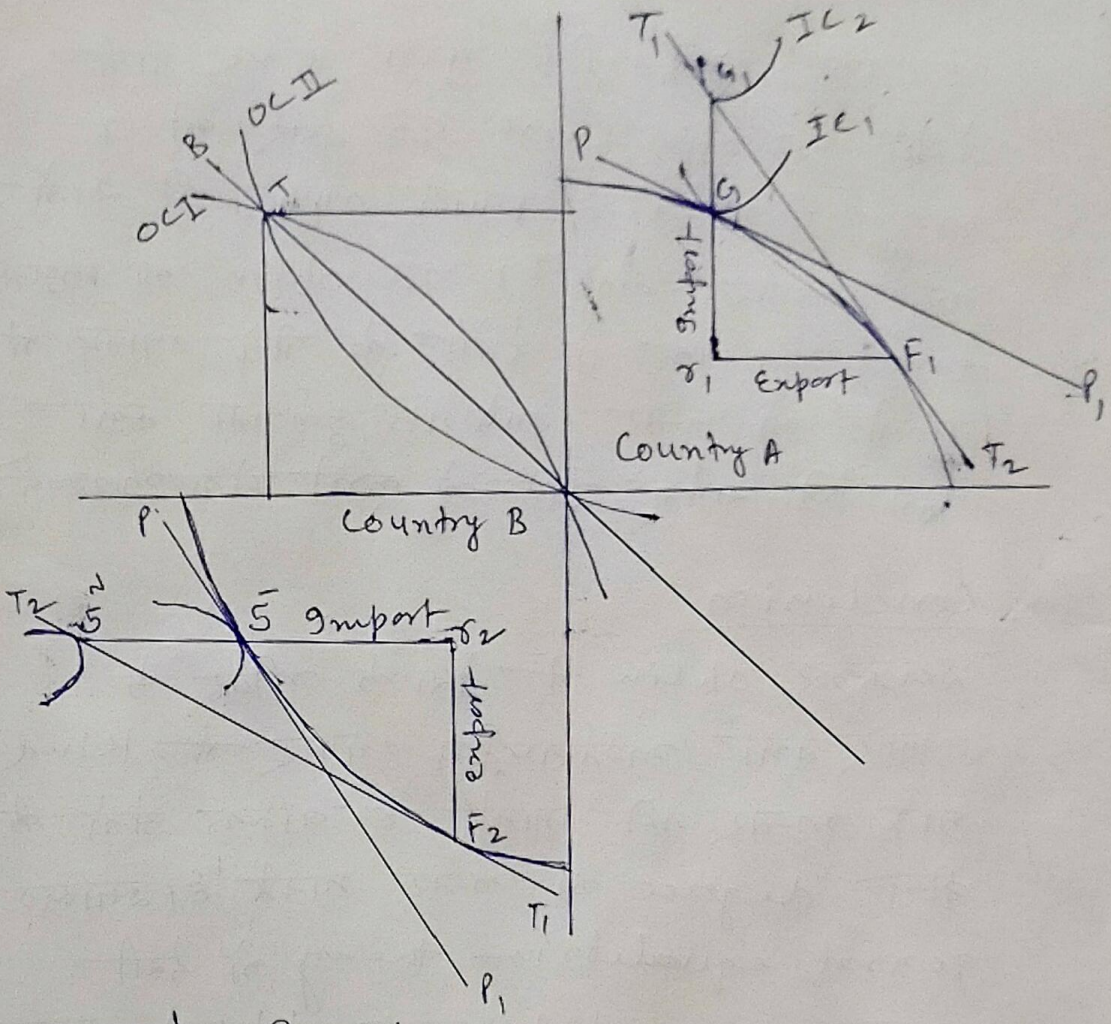

उपरोक्त चित्र मे Country I तथा Country II के बीच मे उपलब्धता में अन्तर है और इसलिए दोनों देशों के बीच वस्तुओं के मूल्य मे सापेक्षिक अन्तर का जन्म होता है। और दोनों देशों के बीच अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार का जन्म होता है। उपर के चित्र मे Country A r_1F_1 मात्रा की वस्तु का निर्यात करता है और r_2E_2 मात्रा Country B आयात करता है। ~~और Country B के~~ ~~व्यापार निर्यात करता है~~ दूसरी ओर r_1G मात्रा Country A आयात करता है और Country B r_2F_2 मात्रा निर्यात करता है। उपर के चित्र से स्पष्ट

है कि अन्तर्राष्ट्रीय मुल्य B पर दोनों देशों का offer curve एक दूसरे को T बिन्दु पर काटती है जिससे व्यापार की शर्तों का निर्धारण होता है। अतः ohlin का सिद्धान्त बतलाता है कि दो देशों के बीच व्यापार में मुल्यों का अन्तर, सापेक्षिक दुर्लभता तथा मांग के सापेक्ष पूर्ति में कमी होना आवश्यक है।

Conclusion

इसप्रकार ohlin ने देश के भीतर के व्यापार तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में kind का अन्तर नहीं मानते हैं बल्कि दोनों के बीच degree का अन्तर मानते हैं। इसलिए general equilibrium theory को देशी व्यापार तथा विदेशी व्यापार दोनों के लागू किया जाता है।

Criticism

प्रचलित आलोचकों के अनुसार साध्यनों की सापेक्षिक उपलब्धता में अन्तर के कारण ही वस्तुओं के मुल्यों में विभिन्नता नहीं होती बल्कि अन्य तत्व जैसे उत्पादन के technique में अन्तर, साध्यनों के गुण में अन्तर, उपभोक्ता की मांग में अन्तर तथा उत्पादन हेतु भिन्न के कारण भी देशों के वस्तुओं के मुल्यों में विभिन्नता उत्पन्न हो जाती है।

द्वितीय Haberler के अनुसार वस्तु का उत्पादन लागत उत्पादन साधनों के मूल्यों के द्वारा निर्धारित नहीं होती बल्कि उनके अनुसार वस्तुओं का मूल्य मुख्यतः इन वस्तुओं की प्राप्त उपयोगिता के कारण निर्धारित होती है।

तृतीय Ohlin का सिद्धान्त अवास्तविक है क्योंकि यह वस्तु एवं साधनों के बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता पर आधारित है।

चतुर्थतः Wizantold के अनुसार यह सिद्धान्त आंशिक संतुलन विश्लेषण पर आधारित है न कि विस्तृत सामान्य संतुलन की धारणा पर।

पंचमतः आलोचकों के अनुसार अगर उपभोक्ताओं के चलन में विभिन्नता हो जाए तो Ohlin का सिद्धान्त लागू नहीं होगा।

षष्ठमतः Ohlin के सिद्धान्त में साधनों के मूल्य निर्धारण में साधनों की मांग की अपेक्षा साधनों की पूर्ति को अधिक महत्व दिया गया है किन्तु वास्तविक जगत में साधनों की मांग में परिवर्तन हो जाए तो साधनों के मूल्य में परिवर्तन हो जाता है। इस सम्भावना की ओर Ohlin का ध्यान नहीं गया।

Dr Sandhya Rai
Dept of Economics